Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

मिथिला का जनजीवन : एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ0 गरिमा
एम.ए., पीएच.डी. (इतिहास)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

मिथिला की पावन भूमि, प्रागैतिहासिक काल से ही अपनी बौद्धिक, आध्यात्मिक और समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के लिए भारत एवं अन्य देशों में अपनी विशिष्ट पहचान रखता रहा है। आधुनिक युग में भी यह क्षेत्र मैथिल, मैथिली पान, माछ, मखान एवं उच्च स्तरीय मिथिला पेंटिग्स के लिए प्रसिद्ध है। मिथिला के जनजीवन की विवेचना हेतु प्रस्तावित है। जनजीवन की एक विस्तृत फलक को समेटे रहती है। यह एक बड़े कैनवास पर बहुरंगी चित्रों से चित्रित होती है। बहुआयामी ही नहीं अपने परतों से निर्मित एवं रूपायित होता है किसी क्षेत्र का जनजीवन। क्षेत्र की जीवन पद्धति, सामाजिक व्यवस्था, प्रचलन या रीति–रिवाज, पर्व–त्योहार, लोकगीत, धार्मिक अनुष्ठानों, सांस्कृतिक विरासतों, लोकमानस और विश्वास, चित्रकला, शिल्प, लोकसाहित्य जैसे अनेक आयामों को आत्मसात किए जनजीवन की सरिता प्रवाहित होती रहती है। किसी क्षेत्र का जन–जीवन जीवन के सुर, ताल लय आदि से गुजित होता रहता है।

पूर्व में बताया गया है कि मिथिला, जनक, याज्ञवलक्य, गौतम, कपिल, गार्गी, मंडन मिश्र, उदयनाचार्य आदि अनेक बौद्धिक प्रखरता के शीर्ष पुरूषों एवं विदूषियों की भूमि रहीं है। यह मनीषियों और संतों की भूमि रहीं है। इनकी विरासत मिथिला के जन–जीवन के रची–बसी गूथी है।

हमारे अध्ययन का काल मुगलकालीन मिथिला से प्रारंभ हो आधुनिक मिथिला तक ही सीमित है। पर जाने–अनजाने प्रासांगिक संदर्भों को

समझने के लिए प्रस्तावित काल की सीमा का अतिक्रमण करना ही होगा। तभी किसी क्षेत्र के जनजीवन का समुचित शब्द चित्र देने में हम सफल होंगे। ध्यान रहे कि जनजीवन किसी काल खंड की देन तक सीमित नहीं हो सकता। काल उसमें परिवर्तन और कभी–कभी क्रांति द्वारा बदलाव लाता है, पर किसी सामाजिक जीवन के रेशे को पूरी तरह से अलग कर देना, उधेड़ देना, कठिन होता है। कभी–कभी असंभव। जन–जीवन के पोषक तत्व के रूप में अप्रकट और अदृश्य रहते हुए भी वे सामाजिक अंतःक्रियाओं, पर्वो और रीति–रिवाजों में अपनी अहमियत रखते है।

ऐतिहासिक एवं पौराणिक आख्यानों में वर्णित मिथिला के शौर्य, स्वाभिमान, बलिदान, त्याग, उर्जस्विता आदि की अनेक कथाएँ है। इस खेत्र में प्रतिभा पनपी संसार आलोकिक हुआ। अंतरिक्ष से वसुन्धरा तक जिसकी बौद्धिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रतिभा से आलोकिक होता रहा है–वह भूमि है मिथिला। मिथिला में आध्यात्मिक–सांस्कृतिक चेतना के प्रयोग धर्मा नायकों की लंबी सूची है। वैदिक संस्कृति, उससे जुड़े चिंतन और लोक साहित्य की सर्जना एवं प्रसार इस भूमि पर हुआ। यज्ञ–भूमि उत्पन्ना सीता, जगत–जननी सीता, राम की भार्या सीता की यह भूमि है। इतना ही नहीं मिथिलापति का विदेह रूप राजर्षि चरित्र, व्यास पुत्र शुक्रदेव के ज्ञानदाता की पावन भूमि है मिथिला। न्याय दर्शन के रचयिता गौतम, सांख्य दर्शन के प्रतिपादक कपिल, याज्ञवल्कय स्मृति के रचनाकार महर्षि याज्ञवल्क्य इसी पावन भूमि की देन है। भारतीय संस्कृति के विकास के प्रथम चरण में मिथिला तर्क और न्याय मीमांसा की ब्राह्मण परंपरा की सबल वाहक रहा है। यह भूमि 'धर्म की सत्ता' और सत्ता के धर्म के निर्धारण और संचालन का अग्रदूत रहा है। आचार–विचार, सदाचार, शिष्टाचार के परस्पर संबंधों की विवेचना करने का श्रेय याज्ञवल्क्य को दिया जाता है। इतना ही नहीं लोकाचार की कसौटियों को सूत्रबद्ध करने का श्रेय भी इसी मनीषी को जाता है। देशज 'संस्कृति' को राष्ट्रीय रूप देने का भी गौरव इस भूमि को है।

यह सत्य है कि मिथिला का सामाजिक जीवन प्रखर बौद्धिक प्रवाह, उदार चिंतन एवं उपलब्धियों से भरा है पर दूसरी ओर मिथिला परंपराओं

की बेड़ियों में जकड़ा, अनुदार, प्रचलनों एवं कट्टरता का भी क्षेत्र रहा है। सामाजिक राजनैतिक परिवर्तनों के पश्चात् भी मिथिला परंपरा की मान्यताओं से मुक्त नहीं हो सकता है।

ग्यारहवीं और बारहवीं शताब्दी में मिथिला अनुदारता का किला रहा है। 13वीं शताब्दी में नित्यकर्म, स्मृति, धर्म, विवाह, स्वयंवर, आत्मशुद्धि, आदि ब्राह्मणोचित कर्मों में मान्य रहे हैं। हाँ, 14वीं शताब्दी में मिथिला की सामाजिक संरचना में थोड़ा सा परिवर्तन तो आया पर अग्रगामी न होकर यह प्रतिगामी ही था।

मिथिला के जनजीवन की जानकारी के लिए वहाँ के समाज में प्रचलित व्यवस्थाओं, जातीय वर्गीकरण, पर्व–त्योहार, वस्त्र, वेश–भूषा, नारी का स्थान आदि पहलुओं को समझना आवश्यक है।

वर्ण व्यवस्था

मिथिला की सामाजिक जीवन धारा मुख्यतः विद्वान ब्राह्मणों और पुरोहित द्वारा निर्धारित होती थी। ब्राह्मण सामाजिक पायदान के सबसे उपर तबके पर थे। कुछ अंश में आज भी यही स्थिति है। वैदिक वर्णव्यवस्था में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र थे। वर्ण व्यवस्था ने अप्रत्यक्ष रूप से वर्ग व्यवस्था को जन्म दिया। आरंभ में यह सामाजिक समरसता एवं सहअस्तित्व का आधार रहा। पर काल क्रम में इसने अनेक विचारों को जन्म दिया। इस विषय पर एक स्वतंत्र अध्ययन किया जा सकता है। आज अनेक जातियों का क्षेत्र मिथिला है। ब्राह्मण, भूमिहार, ब्राह्मण, राजपूत और वैश्य उपरी पायदान पर आज भी मान्य है। पर इसके अतिरिक्त यादव, कुशवाहा, कुर्मी, धानुक, मल्लाह आदि भी यथेष्ट संख्या में इस क्षेत्र में बसते है। ये आज की मान्यता में पिछड़े माने गए है पर अधिकांश भू–पति, शिक्षित और संपन्न है। कतिपय क्षेत्र में कानकुबज्य भी है। अनुमान है कि बहुत से कानकुबज्य बैद्य थे। उनके ग्रम को प्रायः ग्राम के नाम के साथ–साथ विदौलिया जुड़ा है। संभवतः विद्यालय का यह एक विकृत रूप हो। हरिजनों की भी मिथिला में बड़ी संख्या है। इसमें दुसाध, चमार, डोम, मेहतर आदि प्रमुख है। यह बता देना आवश्यक है कि ब्राह्मणों, क्षत्रियों, भूमिहार, ब्राह्मणों आदि ही तरह वैश्यों की भी उपजातियाँ है। जैसे ठठेरी,

केसरवनी, सूरी आदि, ध्यान देने की बात है कि प्रायः वैश्य संपन्न व्यापारी है, पर इसमें सूरी सबसे धनाढ्य है।

किसी सामाजिक या ऐतिहासिक घटना ने इन्हें विभाजित किया है क्योंकि आज भी इन दो के मध्य गारिमा के नाम से जाना जाने वाला एक वर्ण है। इसमें वैवाहिक संबंध भी होते है। डॉ0 मोहन मिश्र ने भूमिहार ब्राह्मणों यतु एवं वार्तालाप एवं व्यवहार में मधुर बताया है। इन्होंने एक उदाहरण के द्वारा यह भी बताया है कि ये सैनिक संवाद वाहक दरवान और लठीधर होते है। महामहोपाध्याय पंडित चित्रधार मिश्रा ने 8 फरवरी 1911 ई0 के लेख को उद्धृत करते हुए डॉ0 मोहन मिश्रा ने भूमिहारों को भी अन्य ब्राह्मणों के समान माना है। उन्हें भी प्रकृत ब्राह्मणों की ही श्रेणी में रखा है।

मिथिला में मुसलमानों की भी अच्छी संख्या है। इनके भी कई वर्ग है। शेख, सैय्यद, अंसारी, असरफ, रंगरेज, कसाई, धुनिया आदि। सामाजिक पायदान पर शेख और सैय्यद अपने को उपर मानते हैं। शेष नीचे के पायदानों पर है। इन्हें भी व्यवसाय के आधार पर विशिष्ट पहचान दी जाती है। रंगरेज कपड़े रंगते हैं। धुनिया रूई धुनकर रजाई आदि बनाने का काम करते है। कसाई माँस का व्यापार करते है तथा दर्जी कपड़े की सिलाई करते है। कुजड़ा सब्जी का काम करते है।

शतपथ ब्राह्मण में पत्नी को अर्धांगिनी कहा गया है। अनेक महिलाओं सुशिक्षित हुआ करती थी। कई ने यथा मैत्रेयी और गार्गी ने वैदिक सूत्रों की रचना की। पर मुगल काल के आते–आते महिलाओं की स्वतंत्रता, मान–सम्मान, सामाजिक मर्यादा और समानता में क्षण आया। वेद के अध्ययन की उन्हें अनुमति नहीं थी। बाल विवाह की प्रथा व्यापक स्तर पर फैल गई। विधवा विवाह की अनुमति सवर्णों में नहीं थी। नारी दासी बन गई। पिता के गृह या पति के गृह कार्य का दायित्व उस पर आ गया। मुसलमानों के आने के बाद तो इन पर अनेक प्रतिबंध लगाए गए। प्रायः मुसलमान इनकी लड़कियों को जवरन उठा ले जाते थे। पर्दा प्रथा इनके सामाजिक जीवन आ बसा। पर्दा प्रथा का इतना बोल–बाला था कि पति–पत्नी दिन में बात नहीं कर सकते थे। लड़कियों का जन्म लेना

परिवार में प्रसन्नता की बात नहीं थी। आज भी यही स्थिति आंशिक रूप से बनी हुई है। पत्नी–पति की निजी संपत्ति जैसे वस्तु बन गई। व्यक्ति या वस्तु बन जाना कितना त्रासद है, इसका अनुमान किया जा सकता है।

महिलाओं में शिक्षा का अभाव था। यहाँ तक कि चार वर्ण जो सामाजिक पायदान के उपर थे, में सभी महिलाओं की शिक्षा न के बराबर थी। एक तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करते चले। मिथिला में अन्य क्षेत्रों की तरह दहेज प्रथा का प्रचलन अपने विभत्स रूप में है। दहेज के कारण अनेक लड़कियों का आत्मदाह, परिवार द्वारा प्रताड़ित होना तथा परित्याग कर देना आज भी भारतीय समाज की तरह मिथिला में प्रचलित है।

वस्त्र तथा आभूषण

मिथिला के नागरिकों के वस्त्र और आभूषण में भिन्नता थी जो आज भी है। मूलतः मुगलकालीन स्थिति का अध्ययन तक सीमित है। वस्त्र व्यक्ति और परिवर की आर्थिक स्थिति पर निर्भर रहता है यही सत्य आभूषणों के संबंध में लागू था और आज भी है।

संपन्न और विलासपूर्ण जीवन जीने वाले लोगों के वस्त्र महँगे और सुन्दर रहते है और संपन्न वर्ग के मध्य चपकन, पैजामा, चोंगा, पगड़ी, धोती, कुरता आदि का रिवाज था। मिथिला में सिर पर पाग धारण करना पंडित पुरोहित एवं ब्राह्मणों के बीच आम बात थी। जाड़े में साल, कम्बल तथा रजाई का प्रचलन था और आज भी है। उस समय निम्न वर्ग के लोग यथा–मुशहर, भूईया आदि लंगौट, कच्छा और गमछा धारण करते थे। टोपी कई प्रकार के थे। कनटोप, दुपलिया, जमीन्दारी टोपी का प्रचलन था।

महिलाओं में साड़ी का प्रचलन था। जम्पर आदि का प्रचलन मुस्लिम प्रभाव के कारण हुआ। निर्धन और विधवाएँ प्रायः चोली या ब्जाउज का प्रयोग नहीं करती थी। मुस्लिम महिलाओं में विशेषकर मध्यमवर्गीय मुस्लिम महिलाएँ पायजामा, सलवार, कुर्ती, चादर आदि का प्रयोग करती थी। बुरका का प्रचलन था। आज तो यह आम बात है। मुस्लिम समाज में पायजामा, लूंगी आदि का प्रचलन था जो आज भी है।

मिथिला आधुनिक परिवर्तनों से अप्रभावित नहीं है। अतः वस्त्र तथा आभूषणों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है। विशेषकर संपन्न, उच्च शिक्षा प्राप्त

पुरूषों एवं महिलाओं में इस परिवर्तन को देखा जा सकता है। पतलून, टाई, पायजामा, टीशर्ट, सलवार, कुर्ती तथा दुपट्टा का प्रचलन तेजी से मिथिला में हुआ है।

मिथिला के पर्व त्योहार

मिथिला आदि काल से यज्ञ, पर्व पूजा आदि की स्थली रही है। मिथिला की संस्कृति कट्टर ब्राह्मणवादी संस्कृति से प्रभावित थी। वर्णाश्रम धर्म का बोलबाला तथा वैदिक विचारों से गहरे रूप से प्रभावित जन जीवन ने हिन्दू देवताओं की पूजन व्यवस्था मान्य रही है। त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश की पूजा अनेकानेक त्योहारों के अनुष्ठानों में प्रमुख स्थान रखता है। यहाँ तक कि नदियों और वृखों की पूजा मिथिलावासी करते है।

महादेव तथा पार्वती गौरी पूजन मिथिला के जनप्रायः बड़े उत्साह के साथ करते है। महादेव मंदिरों की बहुलता मिथिला में बहुलता इसका प्रमाण है। इसका साथ ही शाक्त प्रभाव मिथिला के जनमानस पर देखा जा सकता है। पार्वती और शिव के शाश्वत प्रेम के अनुरूप मिथिला की महिलाएँ अक्षय सुहाग की कामना करती है। शिवरात्रि, तीज जैसे त्योहार शाक्त प्रभाव के प्रमाण है।

यह स्पष्ट करना चाहती है कि किसी क्षेत्र के जनजीवन की बारिकियों को समझने के लिए यहाँ की जीवन पद्धति साहित्य, प्रचलन, रीति–रिवाज, पर्व–त्योहार, चित्रकला, लोकभाषा और लोकगीत को समझना आवश्यक है। हमारा प्रयास है कि मिथिला के जनजीवन का शब्द चित्र आपके समक्ष रखूँ।

संदर्भ सूची :

1. मिथिला इन ट्रजीसन–ए. एन. ठाकुर द्वारा प्रकाशित लेखक–डॉ0 मोहन मिश्रा, प्रकाशन द्वारा प्रकाशित दरभंगा, 2005, पृष्ठ 70.
2. ट्राइव्स एण्ड कास्ट्स ऑफ बंगाल, रिशले एचे0 वाल्यूम–2, पृष्ठ2.
3. मिथिला का इतिहास–डॉ0 रामप्रकाश शर्मा, पृष्ठ 554.
4. वही पृष्ठ 560.

5. बिहार थ्रू द एजेज–आर आर0 दिवाकर, पृष्ठ 527.

6. मिथिला का इतिहास–डॉ0 रामप्रकाश शर्मा, पृष्ठ 561.

7. विलट पासवान, विहंगम कादम्बिनी.

8. मिथिला का इतिहास– डॉ0 रामप्रकाश शर्मा.

9. शुभद्र झा, ए.वी.ओ.आर.आई. 11 पृष्ठ 106, 126,1940.

10.बूमेन डेभल्पमेन्ट प्रोग्राम 1988, पृष्ठ 7

11.संस्कृति के चार अध्याय–रामधारी सिंह दिनकर

12.सिवलीलाईजेशनल रेजिन्स ऑफ मिथिला एण्ड महाकौशल, पृष्ठ 146.